NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

# बच्चों की सुरक्षा के लिए सूती वस्त्र ही क्यों सर्वोत्तम हैं?

शिखा मौर्या[1] एवं डॉ. मुक्ता गर्ग[2]

**सारांश:-**

*बच्चों की सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए सूती वस्त्रों को उत्तम माना जाता है क्योंकि ये पूरी तरह से प्राकृतिक और हानिकारक रसायनों से मुक्त होते हैं जबकि सिंथेटिक कपड़े रासायनिक पदार्थों से निर्मित होते हैं। कपास हवा के संचार को बनाए रखता है, जिससे त्वचा को पर्याप्त ऑक्सीजन मिलती रहती है। इसके अलावा, प्राकृतिक होने के कारण इसमें हानिकारक कार्सिनोजेनिक रसायनों की अनुपस्थिति बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करती है। इस लेख में बच्चों की सुरक्षा के लिए सूती वस्त्र के महत्व और उपयोगिता का विश्लेषण किया गया है।*

**परिचय:**

बच्चों का स्वास्थ्य और विकास कई कारकों पर निर्भर करता है, जिनमें पोषण, स्वच्छता, वातावरण और कपड़े भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बच्चों की त्वचा बहुत कोमल और संवेदनशील होती है, इसलिए उनके लिए ऐसे कपड़ों का चयन करना आवश्यक है जो सुरक्षित, आरामदायक और स्वास्थ्य के अनुकूल हों। आज के समय में कपड़ों के कई प्रकार उपलब्ध हैं, जिनमें मुख्य रूप से सूती और सिंथेटिक कपड़े अधिक प्रचलित हैं।

**कपास का इतिहास**

कपास एक प्राकृतिक रेशा है जो कपास के पौधे के बीजों से प्राप्त होता है। मानव ने कपास का उपयोग प्राचीन काल से ही किया है। प्राचीन सभ्यताओं जैसे कि सिंधु घाटी सभ्यता में कपास से कपड़े बनाए जाते थे। ब्रिटिश काल में भारत का कपास उद्योग बहुत प्रसिद्ध था। भारत से कपास यूरोप भेजा जाता था और वहां से मशीनों की सहायता से कपड़े बनाए जाते थे।

**सूती रेशा (कॉटन फाइबर) बनने की प्रक्रिया**

कपास से सूती धागा और कपड़ा तैयार करने की प्रक्रिया कई चरणों से होकर गुजरती है। सबसे पहले खेतों में कपास के पौधे उगाए जाते हैं। जब कपास के फल पक जाते हैं, तो वे फटकर अपने अंदर के सफेद और मुलायम रेशों को बाहर प्रकट कर देते हैं। इसके बाद इन रेशों को पौधों से सावधानीपूर्वक तोड़ा जाता है।

**शिखा मौर्या[1] एवं डॉ. मुक्ता गर्ग[2]**

[1]पी.एच.डी. (शोध छात्रा), मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग, सामुदायिक महाविद्यालय,

[2](सह-प्राध्यापक), मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग, सामुदायिक महाविद्यालय,

**चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)**

तुड़ाई के बाद कपास को जिनिंग प्रक्रिया से गुजारा जाता है, जिसमें रेशों को बीजों से अलग किया जाता है। इसके पश्चात रेशों को अच्छी तरह साफ करके बड़े-बड़े गट्ठरों के रूप में दबा दिया जाता है, ताकि उन्हें आसानी से कारखानों तक पहुँचाया जा सके। कारखानों में इन रेशों को विशेष मशीनों की सहायता से सुलझाकर सीधा और समानांतर किया जाता है। इस प्रक्रिया के बाद रेशों को कताई (स्पिनिंग) के माध्यम से धागे में परिवर्तित किया जाता है। अंततः तैयार धागों को करघों या मशीनों की सहायता से बुनकर सूती कपड़ा बनाया जाता है।

**कृत्रिम रेशा बनाने की प्रक्रिया**

कृत्रिम रेशे वे रेशे होते हैं जिन्हें मनुष्य रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा कारखानों में बनाता है। इनका निर्माण सामान्यतः पेट्रोलियम या कोयले से प्राप्त रसायनों से किया जाता है। सबसे पहले छोटे-छोटे रासायनिक कणों को आपस में जोड़कर बड़े अणु बनाए जाते हैं, जिन्हें पॉलिमर कहा जाता है। इसके बाद इन पॉलिमरों को पिघलाकर या घोल बनाकर तरल रूप में किया जाता है। इस तरल पदार्थ को बहुत छोटे छिद्रों वाली मशीन से बाहर निकाला जाता है, जिससे पतले-पतले रेशे बनते हैं। इन रेशों को ठंडा करके मजबूत धागों में बदल दिया जाता है और बाद में इन्हीं धागों से कपड़ा तैयार किया जाता है। इसी प्रकार की प्रक्रिया से नायलॉन, पॉलीएस्टर और एक्रिलिक जैसे कृत्रिम रेशे बनाए जाते हैं।

**सूती वस्त्र ही क्यों सर्वोत्तम?**

सूती वस्त्र प्राकृतिक रेशों से निर्मित अत्यंत उपयोगी तथा स्वास्थ्यवर्धक परिधान माने जाते हैं। ये कपास के पौधे से प्राप्त कोमल रेशों से तैयार किए जाते हैं। अपनी स्वाभाविक कोमलता, सरलता तथा आरामदायक प्रकृति के कारण सूती कपड़े सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए उपयुक्त होते हैं।

सूती वस्त्रों की प्रमुख विशेषता उनकी कोमलता और वायु-संचार की क्षमता है। ये शरीर से निकलने वाले पसीने को शीघ्रता से अवशोषित कर लेते हैं, जिससे शरीर को शीतलता और आराम का अनुभव होता है। विशेषकर उष्ण जलवायु वाले क्षेत्रों में सूती वस्त्र अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। ये त्वचा को स्वच्छ और शुष्क बनाए रखने में सहायक होते हैं।

**बच्चों के सुरक्षा के लिए सूती वस्त्र बेहतर विकल्प**

बच्चों की सुरक्षा के लिए सूती वस्त्रों को सबसे बेहतर विकल्प माना जाता है। इसके पीछे कई वैज्ञानिक और व्यावहारिक कारण हैं:

**⇨ त्वचा के लिए सुरक्षित**

बच्चों की त्वचा वयस्कों की तुलना में बहुत अधिक संवेदनशील होती है। चमकीले रंग के कपड़े बनाने के लिए अक्सर धातुओं का उपयोग किया जाता है। जैसे- लेड, क्रोमियम और कैडमियम इनका उपयोग रंगों को स्थिर करने के लिए होता है। ये तत्व बच्चों के त्वचा में गंभीर जलन का कारण बन सकता है। इसके विपरीत, सूती कपड़ा प्राकृतिक रेशों से बनता है, जिसमें हानिकारक रसायन या सिंथेटिक तत्व नहीं होते। इससे बच्चों को रैशेज, खुजली या एलर्जी होने का खतरा न्यूनतम रहता है।

**⇨ हवादार और पसीना सोखने वाला**

सूती कपड़े में हवा का आवागमन बेहतर होता है। यह शरीर के पसीने को सोख लेता है और उसे करने में मदद करता है। इससे बच्चे का शरीर ठंडा रहता है और घमौरियों जैसी समस्याओं से बचाव होता है।

**⇨ रसायनों से मुक्ति**

सिंथेटिक कपड़े (जैसे नायलॉन या पॉलिएस्टर) पेट्रोलियम आधारित रसायनों से बनाए जाते हैं। अध्ययन

बताते हैं कि टेक्सटाइल रंगों में एज़ो डाइज़ का उपयोग होता है जो पसीने के संपर्क में आने पर ये रंग टूटकर 'एरोमैटिक एमाइंस' छोड़ सकते हैं। कुछ एमाइंस को कैंसरकारी माना गया है। इसके विपरीत, जैविक सूती वस्त्रों में कीटनाशकों और हानिकारक रंगों का प्रयोग नहीं किया जाता, जो बच्चों के श्वसन तंत्र और त्वचा के लिए सुरक्षित है।

⇨ **आरामदायक और लचीला**

बच्चे स्वभाव से चंचल होते हैं। सूती वस्त्र मुलायम और हल्के होते हैं, जिससे बच्चों को हिलने-डुलने, खेलने और सोने में कोई परेशानी नहीं होती। यह शरीर पर खिंचाव पैदा नहीं करता।

**निष्कर्ष:** बच्चों के स्वास्थ्य और आराम के लिए सूती कपड़े सर्वोत्तम विकल्प हैं। ये मुलायम, सुरक्षित और पसीना सोखने वाले होते हैं, जिससे बच्चों की त्वचा स्वस्थ रहती है और उन्हें दिनभर आराम महसूस होता है। सिंथेटिक कपड़ों का उपयोग सीमित समय और विशेष अवसरों पर किया जा सकता है, लेकिन बच्चों के रोजाना पहनने के लिए सूती कपड़े ही सबसे उपयुक्त और सुरक्षित माने जाते हैं।